ओमशान्ति मीडिया

प्रजापिता ब्रह्मा के स्मृति दिवस पर

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 14 अंक -19 जनवरी - I, 2014 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.50 रु.

सबको खुशी देना सर्वश्रेष्ठ कला

दक्षिण भारत फिल्म एसोसिएशन के अध्यक्ष एवं विधायक आर.शरद कुमार, ब्र.कु.कुसुम, ईयाल संस्था की सचिव कु.सच्चु, कलाइमायनी पार्वती रवि कंडासला, ब्र.कु.कलावति ब्र.कु.दयाल, ब्र.कु.वीणा, ब्र.कु.उमा अन्य मेहमान उद्घाटन करते हुए।

चेन्नई। दक्षिण भारत फिल्म एसोसिएशन के अध्यक्ष एवं विधायक आर.शरद कुमार ने ब्रह्माकुमारी संस्था के कला एवं संस्कृति प्रभाग द्वारा आयोजित 'अखिल भारतीय कला एवं सांस्कृतिक रिट्रीट' कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि मूल्यों का प्रसार करने वाली फिल्मों के निर्माण की वर्तमान समय में महती आवश्यकता है। जिस शांति की हम खोज कर रहे हैं उसे ब्रह्माकुमारी संस्था के सिद्धांत अपनाकर सहज ही प्राप्त किया जा सकता है।

प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.कुसुम ने कहा कि दक्षिण भारत में कला एवं संस्कृति का परचम अब भी लहरा रहा है। सबसे बड़ी कला है दूसरों को प्रसन्नता देना, जिसे हम राजयोग द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं।

ईयाल संस्था की सचिव सच्चु बहन ने कहा कि मैं अनुभव करती हूँ कि कला-संस्कृति में भी आध्यात्मिकता का समावेश होना चाहिए।

कलाइमायनी पार्वती रवि कंडासला ने कहा कि राजयोग का अभ्यास स्व-परिवर्तन का सर्वश्रेष्ठ स्त्रोत है।

प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु.दयाल ने कहा कि प्राचीन काल में स्वर्ण युग व रजत युग के दौरान कला व संस्कृति को समुचित महत्व दिया जाता था। लेकिन शनैः-शनैः इसकी उपेक्षा होने लगी और अब उसका निम्न स्तर देखने को मिल रहा है। इस पतन के कारण हम अपने भीतर मौजूद मूल्यों, मर्यादाओं से विमुख हो रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति शांति की तलाश बाहर कर रहा है जबकि वह हमारे भीतर मौजूद है।

फिल्म निर्माता के.राजन व मुम्बई से आई कलाकार मीना पटेल ने कहा कि अंतर्मन की प्रसन्नता हमें सही दिशा की ओर ले जाती है और इसमें कला व संस्कृति का योगदान रहता है।

कार्यक्रम का शुभारंभ गायक व संगीत निर्देशक एस.जे.जानानी के प्रार्थना गायन से हुआ। कलाइमायनी के खिताब से नवाजी गयी श्रीमती शोभना रमेश के आकर्षक नृत्य ने सभी को अभिभूत किया।

ब्र.कु.कलावति ने देश भर से आए प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए राजयोग का महत्व भी समझाया। ब्र.कु.वीणा ने आयोजन के महत्व पर प्रकाश डाला। ब्र.कु.उमा ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

कलाइमायनी खिताब से सम्मानित श्रीमती शोभना रमेश, ब्र.कु.पार्वती, ब्र.कु.निहा तथा अन्य।

परमात्म प्रदत्त ब्रह्मा की भूमिका के लिए किया उन्होंने जीवन समर्पित

18 जनवरी, विश्व शान्ति दिवस

44 वीं पुण्यतिथि पर पिताश्री ब्रह्मा को श्रद्धांजलि

निरंतर घूमते हुए कालचक्र में एक ऐसा भी समय आता है जब परमधाम निवासी निराकार परमात्मा, साकार जगत में सभी आत्माओं को माता-पिता तथा सर्व सम्बन्धों का प्यार व दुलार देने के लिए एक अनुभवी, उदार और पावन आत्मा के तन का आधार लेते हैं। वे थे सन् 1876 में सिंध में वैष्णव कृपलानी परिवार में जन्मे दादा लेखराज, जो बचपन से वृद्धावस्था तक एक साधारण ईश्वर भक्त के रूप में ही कार्य-व्यवहार करते रहे। उनका जवाहरात का व्यवसाय था। वे बोलने में मधुर और दिखने में आकर्षक थे। वे राजा-महाराजा और रईसों को पसंद थे। इस कारण उनका व्यवसाय खूब चलता था।

एक सुखी गृहस्थ के रूप में दादा लेखराज के पास सब कुछ था। सुखी और बड़ा परिवार, बेटा-बहू, धन-जायदाद और समाज में सम्मान। उनके एक गुरू भी थे जिनकी सेवा-चाकरी वे पूरी श्रद्धा से करते थे। उन्हें ईश्वर के प्रति लगाव था। वे पूजन-भजन भी करते थे और दान-दक्षिणा में कभी कंजूसी नहीं करते थे।

सन् 1936 के आसपास, जब उनकी आयु साठ वर्ष की हो चुकी थी, उनमें अचानक ही परिवर्तन आया। यह परिवर्तन एकदम आकस्मिक था। एक तरफ तो, कहाँ वे धन कमाने के कारण व्यवसाय से उपराम होने की सोच ही नहीं रहे थे और वहीं दूसरी तरफ, अब उनका मन व्यवसाय से उचटने लगा था। उनको अब एकांत अच्छा लगता था। ऐसा क्यों हो रहा है, उन्हें कुछ समझ नहीं पड़ता था। पर वे जानते थे कि उनका मन जैसे संसार से मुड़कर कहीं अन्य स्थिति में रमने लगा है। ऐसी दोहरी दशा में ही एक दिन जब वे मुम्बई में एक मंदिर में चल रहे सत्संग में बैठे थे, उनका मन एकाएक अशरीरी हो गया। उस हालत में वे सत्संग से उठकर वहीं सामने मकान के एक कमरे में एकांत में बैठ गये। उस समय उनकी भाव-दशा कुछ वैसी ही थी जिसे भावाविष्ट भी कहा जा सकता है। इसी दशा में उन्हें, उस एकांत कमरे में, चतुर्भुज विष्णु का साक्षात्कार हुआ। दादा लेखराज जब इस भाव-दशा से बाहर आये तब वे कौतुहल से भरे हुए थे। उन्हें इस तरह की भावाविष्ट दशा भी पहले-पहले हुई थी। साक्षात्कार भी पहली बार ही हुआ था। उन्होंने कभी ऐसा चाहा या मांगा नहीं था। उन्होंने अपने आसपास भी ऐसा होते नहीं देखा था। यह उनके लिए अनोखा, किन्तु आनंददायक अनुभव था। उन्होंने यह घटना अपने गुरू को भी बताई और इस बारे में मार्गदर्शन चाहा। पर उनके गुरू इस घटना को समझ नहीं पाये।

इस प्रथम साक्षात्कार के बाद फिर ऐसी ही अनचाही, आकस्मिक घटनाओं का सिलसिला शुरू -शेष पेज 4 पर

1936-37 में हुए दिव्य अनुभव एवं बोध के बाद उन्होंने अपने को शिव परमात्मा प्रदत्त अपनी ब्रह्मा भूमिका के लिए सौंप दिया। उनका यह ज्ञान-यज्ञ 'ओम मंडली' से प्रारंभ होकर 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' में रुपांतरित हुआ और सतत विस्तार पाता रहा। 18 जनवरी 1969 की उनके देहत्याग कर अव्यक्त होने के बाद भी आत्माओं को पवित्र एवं दिव्य गुणों से सम्पन्न बनाकर नव-विश्व का सृजन करने के लिए प्रारंभ हुआ यह यज्ञ अब भी जारी है और वे ही अब भी ज्ञान-यज्ञ के सूत्रधार हैं।